ओ३म्
AUM

वेदाङ्ग
(KNOWLEDGE FROM THE VEDAS)

आर्य प्रतिनिधि सभा फीजी-प्रचार विभाग
Arya Pratinidhi Sabha Fiji
P.O. Box 4245, Samabula.

OCTOBER - DECEMBER ISSUE 1997
NO. 15

संस्कार

पिछले अंक से आगे

जातकर्म संस्कार के बाद पांचवा संस्कार नामकरण संस्कार है, जिसमें लड़के या लड़की का नाम रखा जाता है। अन्य संस्कारों को लोग भले ही न करते हों, यह संस्कार इतने महत्व का है कि इसे घर-घर किया जाता है।

नामकरण संस्कार को धार्मिक रूप देने का कारण

किसी वस्तु को पहचानने तथा उसके सम्बन्ध में दूसरों के साथ व्यवहार करने में उसको कोई-न-कोई नाम देना आवश्यक है, परन्तु क्या सिर्फ नाम दे देना काफी है। संस्कारों का उद्देश्य है श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठतर, उच्च-से-उच्चतर मानव का निर्माण करना है। इस दृष्टि से देखा जाये, तो हर एक माता-पिता का कर्त्तव्य है कि सन्तान को ऐसा नाम दे, जो उसे हर समय जीवन के किसी लक्ष्य, किसी उद्देश्य की याद दिलाता रहे।

न जाने किन-किन उमंगों को लेकर दम्पती ने अपनी सन्तान को उच्च बनाने के लिये प्रयत्न जारी रखे। स्वयं शक्तिशाली व पवित्र हृदय बनकर परस्पर संगत हुए, दूसरे व तीसरे मास में गर्भ को शक्तिशाली बनाने के लिए उन्हों ने बन्धु-बान्धवों के समक्ष फिर से पुंसवन-संस्कार के समय प्रतिज्ञाएं लीं, चौथे या छठे मास में माता के गर्भ में बच्चे के हृदय धड़कते ही उन्होंने हृदय में पवित्रता को स्थापन करने के लिए फिर एक साथ होकर सीमन्तोन्नयन-संस्कार करके श्रेष्ठ सन्तान होने के अपने प्रयत्न को पूर्ण करने का निश्चय किया। बालक उत्पन्न होते ही जातकर्म-संस्कार करके उसके आस-पास संपूर्ण वातावरण ऐसा बनाने की कोशिश की, कि उसकी

विकास की दिशा ज्ञान की तरफ चल पड़े। अब वे उन सब भावों को ध्यान में रखते हुए बालक के नामकरण-संस्कार में तैयार हुए हैं। वे बालक का ऐसा नाम रखना चाहते हैं जो कि उन की भावनाओं को संक्षेप में व्यक्त करते हुए बालक को भी सदैव वैसा बनने के लिए प्रेरणा देता रहे। आने-जाने वाले सब व्यक्ति उस बच्चे को जब उस नाम से सम्बोधित कर उस पर अपना प्रेम व्यक्त करेंगे तब प्रत्येक बार में नाम के वे शब्द उस बच्चे के हृदय तथा मस्तिष्क को उस नाम के अर्थ के अनुकूल रूप में प्रभावित कर रहे होंगे। यही कारण है कि नाम के महत्व को ध्यान में रखते हुए वैदिक विचारधारा में इसे धर्म का अंग बना दिया गया है।

शब्द क्या है? शब्द नाम का ही दूसरा नाम है। प्रत्येक शब्द एक नाम है जिससे हम किसी अर्थ को ग्रहण करते हैं। जब हम बच्चे को कोई नाम देते हैं, तब उसके लिए एक शब्द चुन लेते हैं जिसका प्रयोग बच्चे के लिए आयु भर किया जाता है। जिस शब्द का नाम के रूप में आयु भर प्रयोग किया जाना है उसके चुनने में कितना सतर्क होना चाहिये -यह स्वयं सिद्ध है।

नाम का चुनना

सन्तान का नाम चुनना बहुत महत्वपूर्ण है। हम एक व्यक्ति के लिये ऐसे शब्द का प्रयोग करना चाहते हैं जिसमें हमारी अपनी सन्तान के विषय की सब मनोकामनाएं समा जाएं। जिस नाम से उसे सम्बोधित करते हुए, हम मानों उस से कह रहे हों कि बेटे/बेटी! ये है हमारीं तुमसे आशाएं! इसके साथ वह नाम ऐसा होना चाहिए जिसे सुनकर हमारे सगे-सम्बन्धि, कुटुम्बी भी जान सकें कि हमारी अपनी सन्तान के प्रति क्या आकांक्षायें हैं। हम जानें, हमारे जान-पहचान के लोग जानें, हमारा समाज जानें, और हमारी सन्तान स्वयं जाने कि उसके माता-पिता ने उसके प्रति किन आशाओं को अपने हृदय में सजोकर उसका नाम रखा है। अपने नाम को जब बच्चा बार-बार सुनेगा, तो उसका हृदय तथा मस्तिष्क अवश्य नाम में निहित अर्थ की भावना से प्रभावित होगा।

नाम रखते समय ऐसा नाम नहीं रखना चाहिए जो अन्य चीजों के नाम हैं, जैसे पशुओं के नाम, पक्षिओं के नाम, वृक्षों के नाम, नदियों के नाम, फूलों के नाम, आदि। ऊँची भावना को जागृत करने वाला नाम रखना चाहिये। नाम रखने के दो उद्देश्य हैं: एक तो यह कि बालक या बालिका को सम्बोधित किया जा सके, दूसरा यह कि उसके हृदय में उच्च भावना को जगाया जा सके, उसे अनुभव हो कि उसको जीवन में क्या बनना है।

नाम सरल होने चाहिये कठिन नहीं। नाम रखते समय इस बात

का ध्यान रखना चाहिए कि नाम ऐसा हो जिसे सरलता से उच्चारण किया जा सके। बहुत लम्बे नाम भी उचित नहीं होते क्यों कि उनको बोलते समय लोग तोड़कर बोलते हैं तथा इससे नाम बिगड़ जाता है।

नामकरण का दिन निश्चय करना

नामकरण के विषय में संस्कार विधि में लिखा है कि जिस दिन सन्तान का जन्म हो उसी दिन से लेकर दस दिन छोड़ उसका ग्यारहवें दिन नामकरण-संस्कार किया जा सकता है, अथवा एक सौ एक दिन में, या दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में जिस दिन जन्म हुआ हो, उस दिन नामकरण-संस्कार किया जा सकता है।

ग्यारहवें दिन करने का कारण यह है कि लगभग दस दिनों में माता स्वस्थ हो जाती है। ऐसी दशा में ग्यारहवें दिन नामकरण कर सकना सम्भव है। अगर माता कमजोर हो, तो तीन महिने का समय छोड़कर एक-सौ-एक दिनों में संस्कार किया जा सकता है। जो लोग यह चाहें कि उनके परिवार-जन जो ऊपर दिये हुए समयों पर न आ सकते हों, वे सम्मिलित हों, तो उनकी सुविधा को देखकर दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में संस्कार करने की सुविधा दी गई है ताकि सब को यथा-समय पहुँचने का निमन्त्रण दिया जा सके।

एक बात याद रहे कि नाम जल्द-से-जल्द रखने का प्रयास करना चाहिये, जिससे बच्चे पर उस नाम का संस्कार पड़ सके तथा बच्चे को सम्बोधित करने में सुविधा हो। बिना शुद्ध नाम के बच्चे को लोग तरह-तरह के नामों से पुकारते हैं, जिससे उस पर उल्टे संस्कार पड़ जाते हैं। इसलिए ग्यारहवें दिन में नामकरण संस्कार करना सर्व श्रेष्ठ है। देखा जाता है कि नाम रखने के बाद भी कई लोग बच्चों को कई दूसरे नामों से पुकारते हैं। ऐसा करना ठीक नहीं है क्योंकि बच्चे पर उसके अपने असली नाम का प्रभाव नहीं पड़ेगा। माता-पिता को विद्वानों के सलाह से बच्चों के नाम को चुनना चाहिये।

जिस दिन नाम धरना हो, उस दिन अति प्रसन्नता से इष्ट-मित्र, हितैषि लोगों को बुलाकर, यथावत् सत्कार कर, यजमान जो बच्चे का पिता है और पुरोहित संस्कार को आरम्भ करें। इस संस्कार में बच्चे की माता अपने पति के बाईं ओर बैठेगी तथा पिता अपनी पत्नी के दाहिने ओर बैठेगा। ऐसा इसलिए क्योंकि पिता ही सन्तान का नामकरण संस्कार करता है अर्थात् संस्कार विधि में दी गई 'नामकरण संस्कार' विधि को यज्ञ द्वारा सम्पूर्ण करने के बाद पिता बच्चे का नाम घोषित करता है। यह माता-पिता का परम कर्त्तव्य है कि अपने बच्चों के नामों का अर्थ जानें तथा बच्चों को भी, नाम का अर्थ जनावें। (अगले अंक में - निषक्रमण संस्कार)